2

सुनकर वाणी जिनवर की...

सुनकर वाणी जिनवर की,
म्हारे हर्ष हिये न समाय जी ।। टेक ।।
काल अनादि की तपन बुझायी,
निज निधि मिली अथाहजी ।। 1 ।।
संशय, भ्रम और विपर्यय नाशा,
सम्यग्बुद्धि उपजाय जी ।।2।।
नर–भव सफल भयो अब मेरो,
'बुधजन' भेंटत पायजी ।। 3 ।।

समस्त राग–द्वेष के विकारों से रहित और केवलज्ञान के धारी श्रीजिनेन्द्र भगवान की दिव्यध्वनि सुनकर मेरे हृदय में अत्यधिक आनन्द का अनुभव हो रहा है।।टेक।।

हे प्रभो! आपकी दिव्यवाणी सुनकर मेरे अनादिकालीन अज्ञान रूपी ताप का आज अंत हो गया है और मुझे आत्मज्ञान रूपी निधि की प्राप्ति हो गई है।।१।।

हे परमात्मा! आपके द्वारा प्रतिपादित इस तत्त्वज्ञान से मेरे संशय और विपरीतमय अज्ञान का नाश हो गया है और सम्यग्ज्ञान प्रगट हो गया है।।२।।

कविवर बुधजनजी कहते हैं कि हे जिनेन्द्र देव! आपकी यह उपकारी वाणी सुनकर मेरा यह मनुष्य भव मानो आज सफल हो गया है क्योंकि अब संसार परिभ्रमण का कारण और उससे मुक्त होने का सच्चा मार्ग मुझे ज्ञात हो गया है।।३।।